मैं आईने बेचता हूँ

(ग़ज़ल संग्रह)

नीरज कुमार

BlueRose ONE .com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Neeraj Kumar 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-517-5

Cover Design: Deepak Katheria
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: September 2026

DISCLAIMER

All the works presented in this book are literary and poetic expressions. Any metaphors, symbols, examples, or statements used herein are intended solely in a creative and literary context. They are not intended to hurt or offend any individual, community, religion, caste, gender, institution, or group, nor should they be interpreted as instructions or encouragement to engage in any harmful or inappropriate act. Readers are requested to interpret the works within their intended literary and metaphorical context.

अस्वीकरण

इस पुस्तक में प्रस्तुत सभी रचनाएँ साहित्यिक एवं काव्यात्मक अभिव्यक्तियाँ हैं। इसमें प्रयुक्त रूपकों, प्रतीकों, उदाहरणों अथवा कथनों का उद्देश्य केवल रचनात्मक एवं साहित्यिक संदर्भ में अभिव्यक्ति करना है। इनका उद्देश्य किसी व्यक्ति, समुदाय, धर्म, जाति, लिंग, संस्था या समूह की भावनाओं को ठेस पहुँचाना या उनका अपमान करना नहीं है। न ही इन्हें किसी हानिकारक या अनुचित कार्य को करने के निर्देश अथवा प्रोत्साहन के रूप में समझा जाना चाहिए। पाठकों से अनुरोध है कि वे इन रचनाओं का अर्थ उनके अभिप्रेत साहित्यिक एवं रूपकात्मक संदर्भ में ही ग्रहण करें।

पिता
श्री वीरेन्द्र साह

एवं

स्वर्गीय माता
श्रीमती मालती देवी
को समर्पित।

भूमिका

''मैं आईने बेचता हूँ'' मेरी पहली लिखित पुस्तक है, जो एक **ग़ज़ल संग्रह** के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है। एक लेखक, कवि या ग़ज़लकार जब लिखता है, तो वह केवल शब्द नहीं लिखता बल्कि अपने भीतर महसूस किए गए संसार को काग़ज़ पर उतारता है। किसी विषय के बारे में सोचना और उन्हें महसूस करना दोनों अलग बातें है, सोचना केवल एक मानसिक क्रिया हो सकती है। लेकिन महसूस करना और उन सच्चाइयों को भीतर तक जी लेना अलग बात है।

मेरी लिखी हुई प्रत्येक ग़ज़ल के शेर समाज और व्यक्ति को केवल उनका अक्स नहीं दिखाते, बल्कि वे चेहरे भी दिखाते हैं जिन्हें अक्सर हम देखना नहीं चाहते, या देखकर भी नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

आईना कभी झूठ नहीं बोलता। जो जैसा है, उसे वैसा ही दिखा देता है। मेरी लिखी हुई पुस्तक भी आईने जैसी है , जिसमें समाज अपने आपको देख सके। यह पुस्तक किसी उपदेश की तरह नहीं लिखी गई। मैंने केवल वही लिखा है जो आसपास देखा , महसूस किया और भीतर तक अनुभव किया। यदि इन ग़ज़लों को पढ़ते हुए कहीं आपको अपना कोई अनुभव दिखाई दे , कोई दबा हुआ दर्द याद आए , कोई भूली हुई संवेदना जागे, या आप ख़ुद से कुछ प्रश्न करने लगें तो मैं समझूँगा कि मेरा लेखन अपने उद्देश्य तक पहुँच गया।

एक रचनाकार के लिए सबसे बड़ा सुख प्रसिद्धि नहीं , बल्कि यह उद्देश्य होता है कि उसके शब्द किसी के भीतर हलचल पैदा कर सके। यदि मेरी ग़ज़लों के कुछ शेर भी किसी व्यक्ति को सोचने पर मज़बूर कर दें, किसी संवेदना को जीवित कर दें , या समाज में सार्थक परिवर्तन की छोटी-सी शुरुआत बन जाएँ, तो मैं अपने लेखन को सफल समझूँगा।

मैं उन सभी पाठकों का हृदय से आभारी हूँ जो इस पुस्तक को केवल पढ़ेंगे नहीं , बल्कि महसूस भी करेंगे। क्योंकि शब्दों की वास्तविक यात्रा आँखों से नहीं, हृदय से होकर गुजरती है।

जज़्बातों की रवानी में डूब जाते हैं लोग,
होकर बेक़ाबू ,   क़त्ल कर जाते हैं लोग

आसाँ नहीं   आईने   से रूबरू होना,
ख़ुद को   देखकर   डर जाते हैं लोग

मैंने अपनी ग़ज़लों की भाषा को यथासंभव सरल और सहज रखने का प्रयास किया है। सामान्यतः ग़ज़लों को समझना थोड़ा कठिन माना जाता है , क्योंकि उनमें प्रतीकों , संकेतों की भाषा का प्रयोग अधिक होता है। किंतु मैंने कोशिश की है कि मेरी ग़ज़लों के शेर अपनी सादगी के माध्यम से सीधे पाठकों के दिल तक पहुँच सकें। मैं चाहता हूँ कि पाठक केवल शब्दों को न पढ़े ,बल्कि उनसे सहजता से जुड़े और उनके भीतर छिपे भावों को महसूस कर सकें।

कितना भी दे लो इस जहान को,
तोड़ देंगे फिर भी तेरे मकान को

पार हो गई हदें हैवानियत की भी,
सजदा करता हूँ मैं अब शैतान को

अंत में बस इतना ही कहना चाहूँगा –
हर इंसान के भीतर एक संसार छिपा है, और शायद साहित्य उसी छिपे हुए संसार तक पहुँचने का सबसे सच्चा मार्ग है।

इक छुपी दास्ताँ है, हर हादसे के पीछे,
कुछ भी नहीं होता, बिना सबब हुए

— नीरज कुमार

अनुक्रमणिका

(1) आँखों से आँसू बहा करते हैं 15

(2) यूँ ही नहीं होते बेवफ़ा लोग 16

(3) दिखता है जो, वो होता नहीं 17

(4) अखबारों के पन्ने नीलाम हुए 18

(5) दिमाग़ का रिश्ता दिल से 19

(6) दिल से सुनूँ या दिमाग़ से 20

(7) न पाने की चाह, न खोने का ग़म रखो 23

(8) नाम बनाने में ज़माने लगे मुझे 24

(9) वो समंदर-समंदर कर रहा था 25

(10)पल दो पल का सफ़र है 26

(11) अपना दिल ख़ुद को देकर आबाद कीजिए 27

(12) हर टूटा तारा, ख़्वाब वाला होता है 28

(13) जज़्बातों की रवानी में डूब जाते हैं लोग 31

(14) हक़ीक़त से यूँ न मुँह मोड़िये, साहब 32

(15) अधूरे रहकर भी कामिल हो जाओ 33

(16) जो दर्द-ए-दिल कम करे, वो दवा होती 34

(17) अच्छा हूँ, न बुरा हूँ 35

(18) न थे कुछ, पर जब अजब हुए 36

(19) दफ़्न इक कसक, सीने से निकालूँ कैसे 39

(20) ख़ुद के जब परवाने हो गए 40

(21) जिस्म बूढ़ा हुआ तो क्या, दिल में जवानी रखो 41

(22) टूटे दिल की दवा करे कोई 42
(23) हर लम्हा, तेरी इबादत किया करते हैं..43
(24) बातें बड़ी-बड़ी जो करते हैं लोग..44
(25) खामोश बैठे रहते हैं तन्हाई में..47
(26) छोड़ गया जो, उसे दिल से दफ़ा कर..48
(27) चलो आईने से बात की जाए..49
(28) तमाम दिल यहाँ बेगाने हो गए 50
(29) दिल मोहब्बत में बीमार न हो..51
(30) दर्द आँखों में मत छुपाया करो..52
(31) दिल से दिल का दिलदार मिले कोई..55
(32) रहता हो इंसाँ जहाँ, वो शहर चाहता हूँ..56
(33) दहकते हुए अंगारों को हाथ लगा कर देखो 57
(34) पल दो पल की कहानी है 58
(35) अधूरी है ज़िंदगानी बिना प्यार के..59
(36) शर्मिंदगी महसूस हो रही है जाने में..60
(37) क्या चीज़ नई, क्या पुरानी लगी..63
(38) वो शख़्स मुझे रुलाता रहता है 64
(39) ऐतबार पे भी ऐतबार न करो 65
(40) ये ज़िन्दगी का दस्तूर क्या है 66
(41) चल रहे झूठी मोहब्बत के ज़माने हैं..67
(42) उँगलियाँ सोच समझकर उठाया करो..68
(43) जुंबिश नहीं होती अब इंसानों में..71
(44) विश्वास देकर, विश्वासघात किया करते हैं 72
(45) वो शक़्स मुझे बर्बाद करके..73

(46) दुनिया इक कड़ी है..74
(47) क़ीमती है ज़िन्दगी, ज़िन्दगी की कोई क़ीमत नहीं होती..............................75
(48) मुहब्बत है पर बता नहीं सकते...76
(49) आँखों में आँसू, लबों पे हँसी छाई है...79
(50) जगह-जगह कैसा मंज़र है 80
(51) इक राज़ बहुत ही गहरा है...81
(52) बाहर से ठन्डे, भीतर से उबाल है..82
(53) ख़ुद से टकराना आसान नहीं होता...83
(54) आसाँ नहीं है ज़िन्दगी जीने के लिए 84
(55) कोई हो, जिसे हाल-ए-दिल बयाँ करे 87
(56) दुखा के दिल, महफ़िल रंगीन करते हो...88
(57) सारी इबादतें क्यूँ , सिर्फ़ ख़ुदा के लिए...89
(58) चल रहा फ़हश ये ज़माना है 90
(59) दिल में दर्द, चेहरे पे मुस्कान रखता हूँ..91
(60) हमें सारे रुत सुहाने लगे 92
(61) तोड़कर दिल जो हँसा करते हैं 95
(62) बेबसी पे यूँ न मुस्कुराया करो 96
(63) सभी ख़ुदा से इक गुज़ारिश करें 97
(64) बेबसी दुनिया भर को दिखाते हो...98
(65) कुछ बात हो, तो खुलकर बोला करो 99
(66) जुगनुओं की रोशनी में पनाह मिल जाए...100
(67) शाख़ों से पत्ते टूट जाया करते हैं...103
(68) अदाकारी अब अदाकारी न रही 104
(69) चेहरे पे हँसी, दिल में ग़ुबार रखते हैं 105

(70) कदमों पे उसके जहाँ रख दिया 106
(71) असली से नकली हो गई ज़िन्दगी 107
(72) साथ थे तो कोई क़दर न रही...108
(73) न रहा डर इश्क़ में रुसवाई का 111
(74) ये दिल कमबख़्त मानता नहीं 112
(75) आँखे मुन्तज़िर है तेरे दीदार के लिए..113
(76) चाहिए मंज़िल तो इंतजार भी रख 114
(77) बच्चे खिलौने से, खुदगर्ज़ जज़्बातों से खेलते हैं......................................115
(78) उम्मीदों की दुनिया मत सजाया करो...116
(79) कितना भी दे लो इस जहान को 119
(80) रहा करो मसरूफ़ ख़ुद की ख़िदमत में 121

ये ज़िन्दगी का क्या दस्तूर है
अपने ही अपनों से दूर हैं

सबकी है शराब अपनी-अपनी
हर कोई ख़ुद के नशे में चूर है

—

(1)

आँखों से आँसू बहा करते हैं,
अपने ही अपनों से दगा करते हैं

दुश्मन अपने ही लोग हैं यहाँ,
पराए तो अक्सर दुआ करते हैं

कीमत है आज पैसों की, जनाब,
टके सेर ईमान बिका करते हैं

मोहब्बत तो कहावतों में है, मियाँ,
लोग अब जिस्मों का नशा करते हैं

देते हैं ज़ख्म वही लोग अक्सर,
जो घाव भरने की दवा करते हैं

(2)

यूँ ही नहीं होते बेवफ़ा लोग
पूछ लो आख़िर, क्यूँ हैं खफ़ा लोग

बूढ़े हो चुके हैं भीतर से,
बाहर से दिखते हैं जो जवाँ लोग

नहीं घटता कोई झुकने से,
फिर भी नहीं मानते, ख़ता लोग

मसरूफ़ रहा करो अपने काम में,
आते-जाते रहेंगे सदा लोग

सुन लिया करो ख़ुद की भी,
ज़हर को भी कह देंगे दवा लोग

इबादत की आड़ में, ख़ुदा की,
किया करते हैं दगा लोग

(3)

दिखता है जो, वो होता नहीं
जो करता है, वो कहता नहीं

मिला है, वो बिछड़ ही जाएगा,
साथ हमेशा कोई रहता नहीं

देखे हैं ख़ुद की आँखों में आँसू मैंने,
कौन कहता है, मर्द रोता नहीं

मौत से भी बदतर है मर्ज़,
मरीज़-ए-दिल सुकूँ से सोता नहीं

रखा करो डोर संभाल के रिश्तों की,
हर शख़्स फिर से पिरोता नहीं

चुभा करता है इक मलाल बहुत,
काश ! मुझसे वो खोता नहीं

समझता कोई मेरे बदलते रुत को,
ख़ुद को अश्क़ों में यूँ डुबोता नहीं

(4)

अख़बारों के पन्ने नीलाम हुए
सच लिखने वाले बेकाम हुए

टिप-टिप करती उँगलियों से,
कुछ मशहूर, तो कुछ बदनाम हुए

भूलकर छुपी हुई निगाहों को,
सबकी नज़रों में सरेआम हुए

मोहब्बत दिलों से करने वाले,
न जाने कितने तमाम हुए

बिक गए दिखने वाले यहाँ,
करने वाले गुमनाम हुए

सीख ली हमने भी धोखेबाज़ी,
अधूरे पड़े सारे काम हुए

(5)

दिमाग़ का रिश्ता दिल से,
जैसे समंदर मिलता साहिल से

दो कमरे, दर्जनों बसे लोग,
क्या पूछूँ खाली पड़े महल से

क़ैद पड़े खिलौने घरों में आज,
सूनी हैं गलियाँ चहल-पहल से

ऐतबार न कर किसी पे यूँ ही,
पढ़ते नहीं लोगों को शक्ल से

चुरा सकते हैं सब कुछ हम,
आती नहीं लियाक़त नकल से

बुरी संगत में पाक रहे कैसे,
पूछो कीचड़ में खिले कमल से

(6)

दिल से सुनूँ या दिमाग़ से,
जलता रहता हूँ इस आग से

सिर्फ़ औरतों पे ही क्यूँ लगता है,
ये शिक़ायत है मुझे दाग़ से

अपने-अपने बग़ीचे को सींचकर,
जलते क्यूँ हो आपस के बाग़ से

उजाले शहर में जगह - जगह पे,
क्या पूछूँ गाँव के बुझते चराग़ से

वाक़िफ़ हूँ अपने दुश्मनों से,
फ़िक्र है आस्तीन के नाग से

क्या कहने हैं इस बेदर्द ज़माने के
धंधे चल रहे हैं लूटकर कमाने के

—

(7)

न पाने की चाह, न खोने का ग़म रखो
आने - जाने वालों की अहमियत कम रखो

शहज़ोर जिस्म, ख़्वाहिश है सबकी,
ज़रा ग़मों को सहने का भी दम रखो

ज़्यादा नहीं, दो चार ही सही,
सफ़र में कुछ ऐसे हमदम रखो

टूट जाया करते हैं पक्के रास्ते भी,
फूँक-फूँककर हर इक क़दम रखो

धारदार है ज़ुबाँ, ख़ंजर से ज़्यादा,
हरफ़ों को चुनकर ज़रा नरम रखो

सच के साथ जियो ज़िन्दगी को,
किसी चीज़ का न वहम रखो

(8)

नाम बनाने में ज़माने लगे मुझे,
पल भर में लोग चाहने लगे मुझे

रहने लगा मौज़ूद आज में,
सारे रुत सुहाने लगे मुझे

बोलने लगा मुँह पे महफ़िलों में,
जाने क्यूँ वहाँ से हटाने लगे मुझे

समझकर अपना सब बता दिया,
मौका देखकर सताने लगे मुझे

ज़िक्र किया सच का सामने उनके,
अपनी बातों में घुमाने लगे मुझे

जब इश्क़ का मालूम हुआ उन्हें,
रुला-रुलाकर तड़पाने लगे मुझे

(9)

वो समंदर- समंदर कर रहा था,
फिर क्यूँ दरिया से डर रहा था

शुक्र है कि चाह मुकम्मल हो गई,
बेचारा रोज़ धीरे - धीरे मर रहा था

थी बेताब हँसी उसके चेहरे पे,
न जाने किस सदमे से गुज़र रहा था

बैठकर आईने के सामने इक शख़्स,
ख़ुद की नज़रों में गिर रहा था

निकला था कंबल ख़रीदने घर से,
सड़क किनारे इक बूढ़ा सिहर रहा था

छोड़ गया राहों में अकेला मुझे,
कभी उसका मैं हमसफ़र रहा था

(10)

पल दो पल का सफ़र है,
सीधी तो कहीं उलझी डगर है

नहीं होने देती एहसास मौत का,
कितनी लज़ीज़, मीठी ज़हर है

हो गए रंगीन अख़बारों के पन्ने,
ख़बर हो चुकी बेख़बर है

बहता था सिर्फ़ पानी ही पानी,
अब लाशों में बहती नहर है

तलाश रहती है मुझे इंसानों की,
हैवानियत में बदल रहा शहर है

रखो काज को राज़ तक ही,
लग जाती लोगों की नज़र है

फ़िज़ा ख़राब करते हैं ख़ुद ही,
और कहते, ख़ुदा का क़हर है

छोड़ गया वो इस्तेमाल करके,
ये नेक दिल होने का असर है

(11)

अपना दिल ख़ुद को देकर आबाद कीजिए
ख़ुद को दूसरों में खोकर न बर्बाद कीजिए

अमल ही है हाथों में हमारे,
ख़ुदा से बेहतर की मुराद कीजिए

किया करते हैं सभी, दूसरों की शिकायतें,
कभी ख़ुद से ख़ुद की फ़रियाद कीजिए

हो जाती ख्वाहिशें पूरी, तो क्या गम था,
कोसकर यूँ न ख़ुद को नामुराद कीजिए

भूल गए सब कुछ, कोई बात नहीं,
इक दिन बैठकर, मौत को याद कीजिए

(12)

हर टूटा तारा, ख़्वाब वाला होता है
हर अमल, हिसाब वाला होता है

आसाँ नहीं पढ़ना किसी शख़्स को,
हर चेहरा, इक किताब वाला होता है

नज़ाकत भी होती है, सिर्फ़ काँटे नहीं
हर शख़्स, गुलाब वाला होता है

करते हैं जो इश्क़, बिना शोर-गुल के,
उनका प्यार, बेहिसाब वाला होता है

मत जाया करो कद-काठी, रंग-रूप पे,
हर इंसाँ भीतर, आफ़ताब वाला होता है

मौत का इक तय वक़्त होता
तो लोग गिले शिकवे मिटा कर मरते

—

(13)

जज़्बातों की रवानी में डूब जाते हैं लोग,
होकर बेक़ाबू, क़त्ल कर जाते हैं लोग

देखा है सबने नज़ारा मौत के बाद,
जनाज़ों पे सजकर जाते हैं लोग

बैठा करते हैं महफ़िलों में एक साथ,
फिर क्यूँ धर्म पे बिखर जाते हैं लोग

हो जाती है मौत उसी दिन ही,
भीतर से जब मर जाते हैं लोग

आसाँ नहीं आईने से रूबरू होना,
ख़ुद को देखकर डर जाते हैं लोग

(14)

हक़ीक़त से यूँ न मुँह मोड़िये, साहब
ख़ता है तो झुककर हाथ जोड़िये, साहब

चिपका क्यूँ रखा है बीते हालातों को,
जो हो चुका, उसे छोड़िये, साहब

इक वक़्त पे दर्द बेअसर हो ही जाएगा,
मायूस रहकर ख़ुद को न तोड़िये, साहब

नहीं मिला करते मुक़ाम आसानी से,
पहले ख़ुद को निचोड़िये, साहब

चेहरा न दिखाया करो हर जगह,
कभी-कभी नक़ाब भी ओढ़िये, साहब

जुर्म है सब कुछ सहते रहना भी,
अपनी बात इज़्ज़त से रखिये, साहब

(15)

अधूरे रहकर भी कामिल हो जाओ
दुआओं में सभी के शामिल हो जाओ

जहाँ न मिले जगह तुम्हारी बातों को,
बेवक़ूफ़ बनकर जाहिल हो जाओ

समंदर जैसे थपेड़े हैं ज़िन्दगी के,
बनकर किसी के साहिल हो जाओ

रुककर जंग हो जाता है सब कुछ,
बिना रुके बहता सलिल हो जाओ

ज़िन्दगी इक सफ़र है, मेरे अज़ीज़,
तुम उसके राहिल हो जाओ

मत भागों कामयाबी की दौड़ में,
हो सके तो काबिल हो जाओ

(16)

जो दर्द-ए-दिल कम करे, वो दवा होती
नज़दीक सुकूँ वाली, कोई फ़िज़ा होती

रह रहकर आती है, तस्वीर ख़ता की,
काश ! गुज़िश्ता में जाने की राह होती

किसे बयाँ करूँ,दिल की ये कश्मकश,
पास कोई समझने वाली, सदा होती

रख देता ख़ुद को , ख़ुद के सामने,
ख़ुद को पढ़ने की, अगर अदा होती

रहो ख़ुश तुम भी, रहे ख़ुश हम भी,
लोगों के दिलों में , ऐसी दुआ होती

(17)

अच्छा हूँ, न बुरा हूँ,
हालातों से घिरा हूँ

न ज़िंदा हूँ, न लाश हूँ,
भीतर से मरा हूँ

क्या करूँ, क्या न करूँ,
ज़िन्दगी के उस मोड़ पे खड़ा हूँ

मुन्तज़िर नहीं हूँ अब मौत का,
तैयार जनाज़े पे पड़ा हूँ

ख़ामोश हूँ बाहर से,
भीतर समंदर-सा भरा हूँ

(18)

न थे कुछ, पर जब अजब हुए
सब पूछते हैं, कब ग़ज़ब हुए

इक छुपी दास्ताँ है, हर हादसे के पीछे,
कुछ भी नहीं होता, बिना सबब हुए

पहुँच गई बेरोज़गारी इस हद तक,
आम शख़्स भी, करतब हुए

मिट जाए भूख प्यास ही,
पैसों के ख़ातिर, लोग तलब हुए

नहीं सिखाया बैर रखना किसी ने,
दुनिया में जितने भी मज़हब हुए

कोई भी बेगुनाह न रहा,
गुनहगार इक दूसरे के सब हुए

मिलती है इज़्ज़त उन्हें ही,
खड़े रहते हैं जो अदब हुए

मोहब्बत है तो वो शफ़्फ़ाक रहे
दरमियाँ कोई दीवार न रहे

—

(19)

दफ़्न इक कसक, सीने से निकालूँ कैसे,
ख़ुद को ख़ुद से मैं संभालूँ कैसे

खड़ा हो गया सच, सामने आकर,
फ़रेबी कहकर उसे टालूँ कैसे

गिर पड़ा हूँ ख़ुद की ही नज़रों में,
इन आँखों पे पर्दा डालूँ कैसे

झूठ बोल सकता हूँ सबसे, ख़ुद से नहीं,
ये गलतफ़हमी दिल में पालूँ कैसे

हो चूका हूँ बिखरा हुआ, टूटा हुआ,
ख़ुद को नए सिरे से ढालूँ कैसे

(20)

ख़ुद के जब परवाने हो गए,
मशहूर मेरे फ़साने हो गए

महल खड़ा करने की ख़ातिर,
कितने घर वीराने हो गए

फ़िराक़ हुए जब इश्क़ से,
चलते - फिरते मयख़ाने हो गए

मुहाल हुई ज़िन्दगी इस क़दर,
रोज़ मौत के बहाने हो गए

बैठे पुराने दोस्तों के साथ,
न जाने कितने ज़माने हो गए

क्या ही बात करूँ अजनबियों की,
अपने ही बेगाने हो गए

आई शौहरत जब कदमों पे,
अनजाने भी दीवाने हो गए

(21)

जिस्म बूढ़ा हुआ तो क्या, दिल में जवानी रखो
मर कर भी ज़िंदा रहो, ऐसी कहानी रखो

निकल चलो तुम, मंज़िल के सफ़र पे,
मिले न मिले मंज़िल, पर हौसले तूफानी रखो

बढ़ती है उम्र तो क्या, बढ़ने दो,
तुम बस लहू में रवानी रखो

करे वार आकर सामने से तुम्हारे,
दुश्मन भी ऐसे ख़ानदानी रखो

रखो ज़िंदा जज़्बातों को भीतर अपने,
दूसरों की ख़ातिर आँखों में पानी रखो

(22)

टूटे दिल की दवा करे कोई
मोहब्बत में वफ़ा करे कोई

चाहत जिस्म की नहीं हमें,
रूह -ए-दिल को पूरा करे कोई

मोहब्बत इबादत - ए - ख़ुदा है,
इश्क़ में सजदा करे कोई

वादे कम ही सही, प्यार में,
दिल से निभा करे कोई

छुपकर बेवफ़ा न हो जाए इश्क़,
बैठकर शिकवा करे कोई

लाज़मी है ख़ता इश्क़ में भी,
मुक़ाबिल होकर सुना करे कोई

(23)

हर लम्हा, तेरी इबादत किया करते हैं
दिल में रखकर, तेरी हिफ़ाज़त किया करते हैं

ख़्वाबों में न आओ जिस दिन तुम,
उस दिन, ख़ुद से शिक़ायत किया करते हैं

रखा है सजाकर तुम्हें यादों में इस क़दर,
हर चीज़ में, तेरी शिनाख़्त किया करते हैं

क़ैद है तेरी सदाएँ, मेरे ज़ेहन में,
सुनकर उन्हें, दिन की शुरुआत किया करते हैं

जहाँ रहो, महफ़ूज़ रहो, यही तमन्ना हैं
ख़ुदा से, ये इनायत किया करते हैं

(24)

बातें बड़ी-बड़ी जो करते हैं लोग
मौक़े पे फिर वो मुकरते हैं लोग

करते हैं ख़ुद ही काम सारे,
फिर ख़ुद से क्यूँ डरते हैं लोग

आए हैं अकेले, अकेले जाएँगे भी,
फिर भी दूसरों पर मरते हैं लोग

रुक जाते हैं सुकूँ-ए-महफ़िल में,
ग़मों में कहाँ ठहरते हैं लोग

सजाया न करो मंज़िले उम्मीदों की,
न जाने कितने बिखरते हैं लोग

क्या ही रुलाएगी ज़िन्दगी उन्हें,
ग़मों से जो गुज़रते हैं लोग

किया करो मोहब्बत परख कर,
बड़ी मुश्किलों से उभरते हैं लोग

हमनवा हैं ज़िन्दगी की तकलीफें,
तपकर ही संवरते हैं लोग

क्या क़ुसूर दूँ अपने क़ुसूरवारों को
मैं भी किसी का क़ुसूरवार रहा होऊँगा

—

(25)

खामोश बैठे रहते हैं तन्हाई में,
गूँजती हैं आवाजें दिल की गहराई में

आसान काम नहीं होता भुला देना,
देखता रहता हूँ उसे हर परछाई में

बहुत कुछ सिखा देती हैं ये राहें,
सबक मिला करता है बेवफ़ाई में

ये किरदार हर किसी के बस में नहीं,
ज़ख्म मिलते हैं बहुत अच्छाई में

ज़रा संभलकर चला करो इस उम्र में,
ख़ताएँ होती हैं अक्सर तरुणाई में

चलो कुछ तो फायदा है बिछड़न का,
आती हैं यादें अपनों की जुदाई में

पर्दा न रहे दरमियाँ हमारे कोई,
मुझे ये तोहफ़ा देना मुँह दिखाई में

(26)

छोड़ गया जो, उसे दिल से दफ़ा कर
सोच-समझकर अब किसी से वफ़ा कर

रही ज़िन्दगी , तो मोहब्बत फिर हो जाएगी,
यूँ न महबूब की ख़ातिर ख़ुद को फ़ना कर

हो मोहब्बत किसी को इस जहाँ में,
मुकम्मल हो जाए, दिल से ये दुआ कर

खेलना गुनाह है किसी के जज़्बातों से,
ख़ुद को इस ख़ता से जुदा कर

न बन क़ैदी ख़ुद का,
हो सके तो ख़ुद से ख़ुद को रिहा कर

(27)

चलो आईने से बात की जाए,
ख़ुद से ज़रा मुलाक़ात की जाए

रह जाएगा सब कुछ यहीं पे,
तक़सीम की शुरुआत की जाए

ख़ामोश होना ही है मौत के बाद,
क्यूँ न बैठकर बात की जाए

थक जाओगे ख़र्च होते - होते,
ख़ुद की भी इबादत की जाए

क्या याद करोगे इक वक़्त पर,
थोड़ी बहुत शरारत भी की जाए

चाहिए ज़िन्दगी भर का दर्द तुम्हें,
चलो बेइंतहा मोहब्बत की जाए

(28)

तमाम दिल यहाँ बेगाने हो गए,
शुक्र है, हम ख़ुद के दीवाने हो गए

पहुँचकर ऊँचे - ऊँचे ओहदे पे,
बेवकूफ़ भी सयाने हो गए

करते थे बातें बिना बातों के,
अब न करने के बहाने हो गए

मिले इक नेक-दिल शख़्स से,
न जाने कितने ज़माने हो गए

भरी रहती है जेब मेरी पैसों से,
अनजाने भी परवाने हो गए

बस रहे हैं लोग शहर आकर,
गाँव के तमाम घर वीराने हो गए

इंसाँ ने ख़ता की इंसाँ से,
बदनाम सारे याराने हो गए

(29)

दिल मोहब्बत में बीमार न हो
कोई भी मिले सितमगार न हो

प्यार हो तो वो महसूस भी हो,
हर बात पे इज़हार न हो

इश्क़ है तो वो सुकूँ भी दे,
बेचैन होकर कोई बेक़रार न हो

हो मोहब्बत तो वो शफ़्फ़ाक रहे,
आमने - सामने दीवार न हो

चाहत में जुर्रत- ए- कबूलियत हो,
भागकर कोई फ़रार न हो

(30)

दर्द आँखों में मत छुपाया करो,
हाल - ए - दिल बताया करो

कोई नहीं देगा तबस्सुम चेहरे पे,
ख़ुद - ब - ख़ुद मुस्कुराया करो

सुनकर उड़ती-उड़ती बातों को,
किसी पे उँगलियाँ न उठाया करो

नाज़ुक होते हैं नज़दीक के रिश्ते,
दूर रहकर ही उन्हें निभाया करो

धोखा लाज़मी है प्यार में, मियाँ,
डूबने से पहले आज़माया करो

दूसरों को यक़ीं दिलाने की ख़ातिर,
तीसरे की क़सम न खाया करो

झूठ क्यूँ बोलते हो ज़मीर से,
ख़ुद की ख़ता भी मान जाया करो

दूर रहकर भी वो शख़्स मुझे जानता है
क़रीब होकर भी कौन किसे पहचानता है

—

(31)

दिल से दिल का दिलदार मिले कोई,
आरज़ू है, ऐसा यार मिले कोई

थक चुका हूँ अधूरा इश्क़ करके,
अब तो मुकम्मल प्यार मिले कोई

बातें, वादे सब करते हैं इश्क़ में,
हमें तो इश्क़ में ऐतबार मिले कोई

गुज़रना है हद से इश्क़ में,
हम जैसा बेक़रार मिले कोई

मुन्तज़िर रहता हूँ अब मैं,
जान-ए-बहार मिले कोई

(32)

रहता हो इंसाँ जहाँ, वो शहर चाहता हूँ
मिटा दे दिल से ज़हर, वो ज़हर चाहता हूँ

दास्ताँ लिए बैठे हैं सभी ख़ुद के भीतर,
उसे पढ़ने वाली दोहरी नज़र चाहता हूँ

जुड़ जाते हैं रिश्ते विलादत से ही,
इक ख़ुद से बना दोस्ती का घर चाहता हूँ

आएगा वो पल भी, जब क़रीब न होगा कोई,
उस वक़्त ख़ुद से सँभलने का जिगर चाहता हूँ

जीत सकता हूँ सब कुछ, दिलों को छोड़ के,
उसे जीतने का अलग से हुनर चाहता हूँ

(33)

दहकते हुए अंगारों को हाथ लगाकर देखो,
है हिम्मत, तो किसी से दिल लगाकर देखो

दिया करते हैं नसीहतें जो रिश्तों की,
ज़रा उनके बीच चिंगारी जलाकर देखो

बनाने हों दुश्मन अगर मुफ़्त में ही,
अपने आशियाने को सजाकर देखो

समझ जाओगे ज़िंदगानी ख़ुद ही,
तूफ़ानों से आँखें मिलाकर देखो

मिलती है इज़्ज़त सिर्फ़ दूर के रिश्तों में ही,
कभी नज़दीक से रिश्ते निभाकर देखो

देखना हो कि अपना कौन है यहाँ,
आफ़तों में सबको बुलाकर देखो

फ़र्क जानना है अपने-पराए का,
अपने गहरे राज़ बताकर देखो

(34)

पल दो पल की कहानी है,
फिर भी ज़िन्दगी से परेशानी है

धीरे - धीरे कट ही जाएगी उम्र भी,
ताउम्र किसने लिखी ये ज़िंदगानी है

मोहब्बत करो, संभलकर यारों,
कितनों की लुटी इसमें जवानी है

देखा, परखा सबको यहाँ पे मैंने,
अब ज़िन्दगी ख़ुद संग बितानी है

नीरज, समझ ले इश्क़ के दस्तूर को,
हर दिल की क़िस्मत में क़ुर्बानी है

(35)

अधूरी है ज़िंदगानी बिना प्यार के
लगते हैं इश्क़ में सारे रुत बहार के

था चेहरे पे उनके नूर-ए-इलाही ऐसा,
अब तो सारे नज़ारे उन्हीं के दीदार के

रस्में, कसमें, यादें, वादे बहुत होते है,
पर चलते नहीं रिश्ते बिना ऐतबार के

डर है इज़हार से, एकतरफ़ा न हो जाए,
यूँ ही चले आते हैं उन्हें निहार के

मोहब्बत, मोहब्बत से नहीं चलती जनाब,
इश्क़ अधूरे ही रह जाते हैं बेरोज़गार के

(36)

शर्मिंदगी महसूस हो रही है जाने में,
पैसे लगते हैं हर जगह कमाने में

बहुत कुछ मिल जाएगा बाजार में,
सब कुछ नहीं मिलता जमाने में

जुड़ों किसी से, पर इस हद तक नहीं,
वक्त नहीं लगाते लोग भुलाने में

भरते हैं समंदर इक इक बूँद से,
नुमाइश में लगते हैं लोग लुटाने में

लगा है पर्दा हर इक चीज़ के आगे,
हजारों राज़ छिपे हैं इक बहाने में

यूँ ही मंज़िल नहीं खड़ी हो जाती,
वक्त लगता है ख़ुद को बनाने में

दुनिया की हर चीज़ में ज़ियाँ देखी मैंने
किताबें ही हैं जो फ़ायदे दिया करती हैं

—

(37)

क्या चीज़ नई, क्या पुरानी लगी
भीतर से सारी वीरानी लगी

देखता रहा जनाज़े को कंधों पे,
ज़िन्दगी दो पल की कहानी लगी

प्यार हो अगर तो ख़ुद से हो,
इंसाँ की अदा शैतानी लगी

क्या ही करे ऐतबार ज़िन्दगी का,
ये फ़ितरत से बेगानी लगी

देख ली दूसरों की ज़िन्दगी मैंने,
मुझे मेरी ज़िन्दगी दीवानी लगी

(38)

वो शख़्स मुझे रुलाता रहता है,
पास तो कभी, दूर जाता रहता है

देखा है अक्सर रिश्तों में मैंने,
दूसरा सिर्फ़ निभाता रहता है

ख़ुद पे पर्दा डालकर वो,
ख़ता मेरी गिनवाता रहता है

बन गया है वो बाज़ार वाला,
सिर्फ़ पैसे ही कमाता रहता है

सुना न कभी इत्मीनान से मुझे,
अब ख़ामोशी पे सुनाता रहता है

मालूम है उसे कमज़ोरी है वो मेरी,
इस बात के फ़ायदे उठाता रहता है

(39)

ऐतबार पे भी ऐतबार न करो
हद से ज़्यादा ख़ुमार न करो

क्या कहेंगे लोग, ये सोचकर,
भीतर से ख़ुद को बेकार न करो

अपनी ज़िंदगानी हसीं बनाने को,
दूसरों की ज़िन्दगी दुश्वार न करो

भूख जिस्म की मिटाने को,
किसी से झूठा प्यार न करो

बदलना क़ायदा है कुदरत का,
यूँ ख़ुद को बीमार न करो

नहीं मिला करती ज़िन्दगी दुबारा,
किसी का हद से इंतज़ार न करो

(40)

ये ज़िन्दगी का दस्तूर क्या है
ऐ ख़ुदा, मेरा क़सूर क्या है

नहीं पूछती मौत किसी से,
बता, ये गुरूर क्या है

देख लिया इश्क़ करके मैंने,
कि होता फ़ितूर क्या है

संगदिल होते हैं हालात,
नहीं देखते चेहरे का नूर क्या है

नज़दीक चीज़ों की क़दर नहीं,
तलाशते फिरते हैं दूर क्या है

नहीं खोजते खूबियाँ चीज़ों में,
सिर्फ़ देखते हैं मशहूर क्या है

राय बना लेते हैं ख़ुद से ही,
सुनते नहीं मजबूर क्या है

देखो जलकर कड़कती धूप में,
पता चलेगा मज़दूर क्या है

(41)

चल रहे झूठी मोहब्बत के ज़माने हैं,
फिर भी लोग इसके दीवाने हैं

सामने खड़ी फ़रेबों की भीड़ मेरे,
अफ़सोस, कुछ लोग जाने-पहचाने हैं

ख़ुदा नहीं हूँ मैं, जनाब,
लोग मेरी अदा के परवाने हैं

ढंग का इक शफ़ाख़ाना नहीं,
जगह-जगह खुले मयख़ाने हैं

लगता है अज़नबी अपना- सा,
अपने लगते अनजाने हैं

(42)

उँगलियाँ सोच समझकर उठाया करो,
पहले ख़ुद के भीतर जाया करो

ख़र्च होने से पहले तुम,
परख कर लोगों को आज़माया करो

ज़माना जेब देखता है, तालीम नहीं,
ज़रा ही सही, पर कमाया करो

कोई बड़ी जीत जीतने के ख़ातिर,
छोटी - मोटी जंग हार जाया करो

उठाना है अगर लुत्फ़ ज़िन्दगी का,
रोज़ मौत को गले लगाया करो

मौत तक चलना आसान नहीं होता
हमसफ़र बड़े इत्मीनान से चुनना

—

(43)

जुंबिश नहीं होती अब इंसानों में,
क़ैद पड़े हैं ख़ुद के तहख़ानों में

कुछ तो बात होगी शराब में,
यूँ ही भीड़ नहीं रहती मयखानों में

बना दी मंज़िले मुफ़लिसों के लिए,
ताले लगे पड़े हैं उन मकानों में

बातें करती हैं दीवारें आपस में,
ऊँचे -ऊँचे चमकते हुए घरानों में

देखनी हो अगर इंसानी गुलामी,
घूमने जाओ कभी कारखानों में

कैसे रहती है रिश्तों में क़ुर्बत,
देखिए छप्पर के आशियानों में

घूम रहे हैं मुज़रिम बाहर,
बेगुनाह पड़े हैं क़ैदख़ानों में

ख़रीद सकते हो सब कुछ,
सुकून नहीं मिलता दुकानों में

(44)

विश्वास देकर, विश्वासघात किया करते हैं
लोग मौके पे मीठी बात किया करते हैं

बैठा करो, उम्र दराज़ लोगों के पास,
वो तजुर्बों की बात किया करते हैं

इक दिमाग़ी मर्ज़ है छुआछूत,
तालीम वाले भी जात-पात किया करते हैं

किसे ही ज़ाहिर करें दर्द अब,
अपने ही आहत किया करते हैं

किया करो ख़ाकी वर्दी की कद्र,
जो हिफ़ाज़त दिन-रात किया करते हैं

ऐतबार नहीं दो तरफ़ा मोहब्बत पे,
हम इक तरफ़ा चाहत किया करते हैं

(45)

वो शख़्स मुझे बर्बाद करके,
रो रहा है अब याद करके

क्या औक़ात है इंसाँ की यहाँ,
ख़ुदा भूला दिए जाते हैं फ़रियाद करके

मुहाल हो गई ज़िन्दगी इस क़दर,
जी रहे हैं लोग जद्दोज़हद करके

बर्बाद ही करेगा ज़माना तुम्हें,
जियो ख़ुद को आबाद करके

इश्क़ किया हमनें इबादत जैसा,
छोड़ दिया उसने नामुराद करके

क़ैद है जो ख़ुद के पिंजरे में,
क्या करेंगे ख़ुद को आज़ाद करके

(46)

दुनिया इक कड़ी है,
जंग लगी पड़ी हैं

बँधी हाथों की कलाई पे,
इक रुकी हुई घड़ी है

तजुर्बा मेरा ही है, पर
उम्र में मुझसे बड़ी है

क्या पता मुकद्दर-ए-वक़्त का,
ये जादू की छड़ी है

जो पास थी कभी मेरे,
आज दूर मुझसे खड़ी है

(47)

क़ीमती है ज़िन्दगी, ज़िन्दगी की कोई क़ीमत नहीं होती
लोगों की सीरत से सुन्दर कोई ज़ीनत नहीं होती

सुनता रहता हूँ बेवफ़ाई के किस्से बहुत,
अफ़सोस, लोगों में कुत्तों-सी फ़ितरत नहीं होती

बहुत से रिश्ते हैं इस जहाँ में,
यारी से हसीं कोई सोहबत नहीं होती

कसाई होता जा रहा है ज़माना,
दिलों में अब रहमत नहीं होती

सिमट चुकी है ज़िन्दगी उँगलियों के बीच,
रिश्तों में पहले जैसी क़ुर्बत नहीं होती

(48)

मुहब्बत है पर बता नहीं सकते
चाह कर भी जता नहीं सकते

आता रहता है लबों पे नाम उसका,
नज़दीक है फिर भी बुला नहीं सकते

पहचान मर्द की है जमाने में,
अश्कों से ख़ुद को भिगा नहीं सकते

पर्दा डाल भी दोगे अगर जमाने पे,
आँखे ख़ुद से चुरा नहीं सकते

कमा भी लो बेशुमार दौलत दुनिया की,
क़र्ज़ माँ का फिर भी चुका नहीं सकते

चाँद अपनी जगह, सूरज अपनी जगह,
चमक किसी की मिटा नहीं सकते

दिल को ज़रा संगदिल भी बनाकर रखा करो
लोग बड़े होकर खिलौनों से नहीं खेला करते

—

(49)

आँखों में आँसू , लबों पे हँसी छाई है,
मुद्दतों बाद चेहरे पे ये ख़ुशी आई है

मत कर मोहब्बत किसी से, दोस्त,
इस राह में   मिलती सिर्फ़ तन्हाई है

उठा नहीं सकता कोई ऊँगली ईमान पे,
बड़ी मुश्किल से   ये शौहरत पाई है

देख ली अच्छाई से जीकर दुनिया,
बुराई की मंडी में बेइंतहा कमाई है

ख़ुदा, रुख़सत कर मुझको मुझसे तू,
अरमानों की   दुनिया बहुत सजाई है

नीरज ,   समझ ले ये बात तू ज़रा,
ज़िन्दगी ख़ुद से लड़ने की लड़ाई है

(50)

जगह-जगह कैसा मंज़र है,
चुभता आँखों में खंजर है

खिलते नहीं फूल दिलों में,
इंसाँ हो चुके बंजर है

क्या ख़ूबसूरती, क्या बदसूरती,
भीतर से सब पंजर है

आसाँ नहीं डूबना मुझमें,
हम दरिया नहीं, समंदर है

जुड़े हुए दिखते हैं जो बाहर से,
भीतर से हो चुके खंडहर हैं

जी भरकर खाइए, जनाब,
ये गुरुद्वारों, का लंगर है

(51)

इक राज़ बहुत ही गहरा है,
पर्दे के आगे झूठों का पहरा है

रह जाएगा सब यहीं का यहीं,
क्या तेरा, क्या मेरा है

मंज़र है बाहर शैतानी भीड़ का,
भीतर भी यही बसेरा है

चढ़ी हुई है परतें दर परतें,
नक़ाब ओढ़ता हर इक चेहरा है

क्या ही बात करूँ परायों की,
हमें तो अपनों ने ही घेरा है

कौन फैला रहा है ये अफ़वाहें,
सियासत शरीफ़ों का डेरा है

(52)

बाहर से ठन्डे , भीतर से उबाल है,
छोटी-मोटी बातों पे कर देते बवाल है

क्यूँ समझता हैं इंसाँ, इंसाँ को चीज़,
ज़ेहन में उठता रहता ये सवाल है

पता चल जाता है क़साइयों को,
ये बकरा पहले से हलाल है

क्यूँ ही छोड़ दिया उसे मैंने,
दिल में छप चुका ये मलाल है

कोई इज़्ज़त नहीं ख़ाकरोबों की यहाँ,
जेबों में रखते सब रुमाल है

(53)

ख़ुद से टकराना आसान नहीं होता
ग़ैरत से बड़ा कोई मान नहीं होता

खोजते हो पाक जगहें, दर-ब-दर,
शमशान से मुक़द्दस कोई स्थान नहीं होता

हाँकते हो शेख़ी छोटी-सी चीज़ देकर,
हयात से बड़ा कोई दान नहीं होता

बहुत कुछ खोना पड़ता है ज़िन्दगी में,
यूँ ही कोई महान नहीं होता

बाहर ढूँढ़ते फिरते हैं सुकून हम,
मन से हसीं कोई जहान नहीं होता

ऊँचे-ऊँचे महलों की क्या औक़ात,
दिल से बड़ा कोई मकान नहीं होता

सुकूँ मिल जाता आसानी से, अगर,
यूँ ही हर कोई हैरान नहीं होता

(54)

आसाँ नहीं है ज़िन्दगी जीने के लिए
ताक़त चाहिए ज़ख़्मों को सीने के लिए

क्या ही जाएँ मयकदे की ओर,
ग़म ही बहुत है पीने के लिए

मुश्किल नहीं है मुस्कुराना , मियाँ,
जिगर तो चाहिए रोने के लिए

बिस्तर सिर्फ़ बिस्तर ही रह गया,
दवाइयाँ बिक रही हैं सोने के लिए

यूँ ही नहीं मिटते लगे हुए दाग़,
वक़्त लगता है धोने के लिए

पुख़्ता हो चुके हैं अब हम,
डर नहीं रहा खोने के लिए

दूसरों में खोकर ख़ुद को जाया किया मैंने
इस क़दर ख़ुद से ख़ुद को पराया किया मैंने

—

(55)

कोई हो , जिसे हाल-ए-दिल बयाँ करें
आरज़ू है, इंसाँ इंसाँ पे तो दया करें

रहमत रहे ख़ुदा की, सभी पर,
चलो मिलकर, सब ये दुआ करें

महसूस करता है दिल, सिर्फ़ दर्द को,
सोच समझकर, किसी से ख़ता करें

नेकी नहीं कर सकते, न सही,
गुनाहों को भी न जमा करें

अपनी ख़्वाहिशों को पूरा करने में,
यूँ न दूसरों की ज़िन्दगी फ़ना करें

मिलती रही बेवफ़ाई अब तक,
कोई तो मिले जो वफ़ा करें

(56)

दुखा के दिल,महफ़िल रंगीन करते हो,
बिना ख़ून किए, जुर्म संगीन करते हो

करने के ख़ातिर, उल्लू सीधा,
लोगों से बातें हसीन करते हो

कतरे होकर, इक ही लहू के,
आपस में जायदाद, ज़मीन करते हो

तबाह करके दूसरों की ज़िन्दगी,
ख़ुद की दुआओं पे आमीन करते हो

जज़्बातों को भीतर से दफ़्न कर,
ख़ुद को चलती हुई मशीन करते हो

ऐतबार नहीं ख़ुद पे तुम्हें,
चलते-फिरते पे यक़ीन करते हो

(57)

सारी इबादतें क्यूँ, सिर्फ़ ख़ुदा के लिए
ख़ुदा ने इंसाँ भी बनाए हैं, वफ़ा के लिए

पूजते हैं बुत को, जगह-जगह जाकर,
क्या-क्या नहीं करते लोग, दुआ के लिए

ऐ ख़ुदा, मुफ़लिसी को मर्ज़ से महफ़ूज़ रख,
बेचना पड़ता है ख़ुद को, दवा के लिए

चलती नहीं धड़कने बिना साँसों के,
फ़िक्र नहीं फिर भी कोई, फ़िज़ा के लिए

बन रहा है बाज़ार मिलावटी, क्या करें,
हद से गुज़र रहे हैं लोग, नफ़ा के लिए

(58)

चल रहा फ़हश ये ज़माना है,
खुलेआम दिखता इसका ठिकाना है

नहीं होता ख़त्म ख़र्च होकर भी,
रखा क़िताबों का घर में ख़ज़ाना है

इक इंसाँ के बुरे बर्ताव के ख़ातिर,
नापाक हो जाता पूरा घराना है

बनो भीतर से हसीं, तो जाने,
बाहर से तो मुरझा जाना है

नहीं बचा मर्ज़ से महफ़ूज़ कोई,
घर-घर बन चुका दवाख़ाना है

(59)

दिल में दर्द, चेहरे पे मुस्कान रखता हूँ,
ज़माने में मर्द वाली पहचान रखता हूँ

बना देते हैं पत्थर, बचपन से ही,
कंधों पे घर का सामान रखता हूँ

मिले कंधा कोई , सर रखकर रोने का,
मौत से पहले, ये अरमान रखता हूँ

सुने कोई, मर्द होने की दास्ताँ को,
भीतर इक अनसुना जहान रखता हूँ

कंधों पे रहती है घर की हिफ़ाज़त,
हर वक़्त हथेली पे जान रखता हूँ

(60)

हमें सारे रुत सुहाने लगे,
ख़ुद को जब चाहने लगे

इज़्ज़त बढ़-सी गई अपनों में,
पैसे जब से कमाने लगे

ज़िक्र हुआ कमज़ोरियों का,
वो महफ़िलों से कतराने लगे

आधे बदनाम यूँ ही हो गए,
मयकदे की ओर जब जाने लगे

नौकरी सरकारी है हमारी,
ये कहकर वो इतराने लगे

तोड़ दिया रिश्ता उन्होंने,
आईना जब से दिखाने लगे

समंदर देखने की बेक़रारी न रही
अब तो इंसानों की गहराई ही अंतहीन लगती है

—

(61)

तोड़कर दिल जो हँसा करते हैं,
इक रोज़ ख़ुद को ही डसा करते हैं

क़दर नहीं करते जो अपनों की,
इक दिन बेइंतहा तरसा करते हैं

भरते नहीं जज़्बातों के ज़ख्म कभी,
आज भी आँखों से बरसा करते हैं

चलते हैं रिश्ते उन्हीं के सुकूँ से,
इक दूसरे पे जो भरोसा करते हैं

हो गया इंतकाल वालिद का,
चलो ज़मीन का हिस्सा करते हैं

है हिम्मत, तो आओ बैठो,
रुबरु होकर खुलासा करते हैं

(62)

बेबसी पे यूँ न मुस्कुराया करो
बुरे वक़्त पे तरस खाया करो

कोई नहीं, सब गुज़र जाएगा,
हाल-ए-दिल को यूँ बहलाया करो

नहीं हो सकते हर वक़्त सही हम,
झुककर, ख़ता भी मान जाया करो

खा गए सब कुछ, ख़रीद-फ़रोख्त कर,
कभी इंसानियत भी कमाया करो

मियाँ, मुनासिब नहीं हिर्स करना,
अपनी थाली का ही खाया करो

(63)

सभी ख़ुदा से इक गुज़ारिश करें,
दिलों में रहमतों की बारिश करें

बन जाए इंसाँ, इंसाँ ही,
कोई तो ऐसी ख़्वाहिश करें

पर्दे में ही है ख़ूबसूरती,
यूँ न ख़ुद की नुमाइश करें

दूसरों की बेबसी देखकर ही,
आगे से फ़रमाइश करें

दिल लगाने से पहले,
सामने वाले की आज़माइश करें

(64)

बेबसी दुनिया भर को दिखाते हो,
दर्द बेचकर, मोटी रकम कमाते हो

झलकती नहीं हमदर्दी आँखों में,
हरफ़ों से अपनापन जताते हो

करते हो बातें, वादे बड़े-बड़े,
वक़्त पे साथ छोड़ जाते हो

जो न कर पाए ज़िन्दगी में,
उन ख़्वाबों को बच्चों पे सजाते हो

मौक़ापरस्त लोग हैं यहाँ,
क्यूँ हर शख़्स से रिश्ते निभाते हो

समझा करो सियासत का खेल,
इक दूसरे का ख़ून क्यूँ बहाते हो

जोड़ना नहीं, तोड़ना जानते हैं लोग,
फिर भी दिल से दिल लगाते हो

(65)

कुछ बात हो, तो खुलकर बोला करो,
दूसरों से यूँ, न मुझे तौला करो

नहीं हो पाते कुछ दर्द लफ़्ज़ों से बयाँ,
पढ़कर चेहरे, उन्हें टटोला करो

नफ़रतें फैला करती हैं ग़ीबतों से,
महफ़िलों में रहकर, मिश्री घोला करो

दिल कोई रैन बसेरा नहीं,
हर शख़्स की ख़ातिर, मत खोला करो

जानना है अगर, ख़ुद को,
भीड़ से, ख़ुद को अकेला करो

जितना चाहे, ख़ाक रगड़ों जिस्म पे,
दिल को, यूँ न मटमैला करो

(66)

जुगनुओं की रोशनी में पनाह मिल जाए,
कोई शख़्स मुझको तनहा मिल जाए

भरोसा उठ सा गया है इबादत से,
मुंतज़िर हूँ कि सामने ख़ुदा मिल जाए

क़दर हो रही है नापाक शख़्स की,
मुझे भी ऐसी कोई अदा मिल जाए

अच्छाई करके बददुआ ही कमाई है,
कर रहा हूँ बुराई, शायद दुआ मिल जाए

कैसे ऐतबार करूँ किसी पे अब,
कोई तो वफ़ा से जुड़ा मिल जाए

करते रहा करो गुनाहों को कम,
न जाने किस बात की सज़ा मिल जाए

राह ज़िन्दगी की ख़ुद के हाथों में है
यूँ ही नाव में पतवार नहीं होता

—

(67)

शाख़ों से पत्ते टूट जाया करते हैं
जिन्हें मरना है, वो मर जाया करते हैं

आ गया जीना जिन्हें ज़िन्दगी को,
वो मौत से भी गुज़र जाया करते हैं

कहते हैं जो, डरते नहीं हम किसी से,
अक्सर ख़ुद से ही डर जाया करते हैं

लिया करो दस्तख़त पन्नों पे,
लोग बातों से मुक़र जाया करते हैं

दिखाई देता है मंज़र, जब लहू का,
दिल रोकर सिहर जाया करते हैं

मिलता है सुकूँ सिर्फ़ इक जगह,
लौटकर जब घर जाया करते हैं

(68)

अदाकारी अब अदाकारी न रही
उम्दा फ़नकारों की बारी न रही

सिमट गई ज़िन्दगी उँगलियों में,
रिश्तों में वो यारी न रही

तमाशा बटोरते हैं लोग खड़े रहकर,
सड़कों पे दिलदारी न रही

बना रहता है ख़ौफ़ मौत का,
जान भी अब हमारी न रही

न लगी हो जो लोगों में,
ऐसी कोई बीमारी न रही

पीने लगी अब शराब हमें,
नशे की वो खुमारी न रही

ग़म है कि छोड़ता ही नहीं,
अपनी चीज़ भी प्यारी न रही

क्या मालूम, कब निकल जाए जाँ,
मौत की भी तैयारी न रही

(69)

चेहरे पे हँसी, दिल में ग़ुबार रखते हैं
लोग सिर्फ़ हरफ़ों में प्यार रखते हैं

खोजते नहीं फ़र्क़ असल-ओ-नक़्ल का,
जो दिख जाए, उसी पे ऐतबार रखते हैं

दिखते हैं जो शहज़ोर बाहर से,
ख़ुद को भीतर से बीमार रखते हैं

मुश्किल है आज फ़ितरतों को पढ़ना,
लोग धोखे के नुस्ख़े हज़ार रखते हैं

जो बाहर भीतर एक-सा हो,
इक ऐसे शख़्स का इंतज़ार रखते हैं

(70)

कदमों पे उसके जहाँ रख दिया,
ये ख़ुद को मैंने कहाँ रख दिया

थक चुका है ये दिल अब मेरा,
ख़ुद को इक कोने में तन्हा रख दिया

चल रहा था सच के कदमों पे,
हाथों में लोगों ने गुनाह रख दिया

दे रही थीं चाहतें तकलीफ़ें हर बार,
अलमारी में क़ैद करके चाह रख दिया

डर लग रहा था उसे कटघरे से,
पैसों से तौलकर गवाह रख दिया

ऐ ख़ुदा, फ़िराक़ से पहले मौत आ जाए,
ख़ुद को उसके ख़ातिर बेपनहा रख दिया

(71)

असली से नकली हो गई ज़िन्दगी
दो उँगलियों के बीच खो गई ज़िन्दगी

फैला हुआ है दिखावे का दौर,
हक़ीक़त से ऊबकर सो गई ज़िन्दगी

बटोरते हैं लोग हमदर्दी आज,
झूठे आँसू रो गई ज़िन्दगी

चल रहे हैं लादकर ख़ुद को,
बनकर बोझ ढो गई ज़िन्दगी

उड़ाते हैं मज़ाक बेबसी देखकर,
दिलों से जज़्बात धो गई ज़िन्दगी

(72)

साथ थे तो कोई क़दर न रही
नज़दीक रहकर भी सहर न रही

होती थीं दुआएँ आँखों में कभी,
अफ़सोस ऐसी अब नज़र न रही

कुछ तो होता आसपास अच्छा,
अख़बारों में ऐसी ख़बर न रही

चलता कहीं तो बिन काँटों के,
सफ़र में ऐसी कोई डगर न रही

हुई हदें पार मिलावट की इस क़दर,
कि ज़हर भी ज़हर न रही

साथ रही वो आख़िर तक,
पर सफ़र की हमसफ़र न रही

ज़माने के धोखे का क्या ग़म करूँ
इक रोज़ तो मौत से ही धोखा खाना है

—

(73)

न रहा डर इश्क़ में रुसवाई का
डर तो है अब बेपनाह जुदाई का

कितनी है मोहब्बत, पूछ लो बता देंगे,
हिसाब नहीं दे पाऊँगा तन्हाई का

बैठ गया ज़माने का ख़ौफ़ इस क़दर,
ऐतबार न रहा ख़ुद की परछाई का

मिला करती है ज़ियाँ ही ज़ियाँ,
क्या फ़ायदा है इस लड़ाई का

बेहिसाब होती जा रही है महंगाई,
खोजता रहता हूँ ज़रिया कमाई का

नहीं सुना करते लोग अब,
क्या करूँ अपनी दुहाई का

कोई तो है, जिसे फ़िक्र है जान की,
शुक्रिया अदा करता हूँ दवाई का

(74)

ये दिल कमबख़्त मानता नहीं,
सब जानते हुए भी जानता नहीं

उधार दे दिए कुछ पैसे मैंने,
वो शख़्स मुझे अब पहचानता नहीं

न होता मसला अगर ज़मीन का,
भाई यूँ भाई पर बंदूक तानता नहीं

मददगारी, मददगारी है, दिखावा नहीं,
हमदर्द बनना कोई महानता नहीं

देख लेता हूँ ख़ुद को उसकी जगह पे,
फिर किसी से रंजिशें ठानता नहीं

बनाई हुई मर्ज़ है जात-पात,
ख़ुदा किसी शख़्स को छानता नहीं

(75)

आँखे मुन्तज़िर है तेरे दीदार के लिए
बेच दिया ख़ुद को तेरे प्यार के लिए

संभाल नहीं पाते रिश्तों की डोर,
नई तरकीबें अपनाते हैं इज़हार के लिए

चीज़ क्या, इंसाँ भी चीज़ बन गया,
नुमाइशें चल रही है बाज़ार के लिए

करते नहीं वफ़ा किसी की ख़ातिर,
गुहार लगाते फिरते हैं ऐतबार के लिए

भेजता है ख़ुदा जरूर इक फ़रिश्ते को,
सजदा किया करो ग़मख़्वार के लिए

नहीं होती हर शख़्स में ये ख़ूबी,
मियाँ, सब्र चाहिए इंतजार के लिए

मत खेला करो किसी के जज़्बातों से,
ख़ुदा सज़ा देते हैं इस गुनहगार के लिए

रखा करो किरदार में ज़रा सख़्ती भी,
ये ज़माना नहीं है ख़ाकसार के लिए

(76)

चाहिए मंज़िल तो इंतज़ार भी रख
ख़ुद पे ज़रा ऐतबार भी रख

कब आ जाए मुसीबत मालूम नहीं,
जज़्बातों से ख़ुद को तैयार भी रख

ज़िन्दगी तेरी है किसी और की नहीं,
ख़ुद पे तू इख़्तियार भी रख

मिले अगर किसी का एहसान तुझे,
उस शख़्स का उधार भी रख

नहीं थकती लेते - लेते ये दुनिया,
कभी-कभी ज़ुबाँ पे इंकार भी रख

नफ़रतें पहले से ही हैं ज़माने में,
दिल के कोने में ज़रा प्यार भी रख

बोल सको बेझिझक होकर,
ऐसा कोई दिलदार भी रख

(77)

बच्चे खिलौने से, खुदगर्ज़ ज़ज्बातों से खेलते हैं
पाक-दिल शख़्स न जाने क्या-क्या झेलते हैं

देखो करके प्यार , नज़ाकत , दुलार तुम,
सख़्त हो चुके दिल भी पिघलते हैं

जताते हैं जो जज़्बातों को प्यार से,
इक रोज़ बड़े बेरहम निकलते हैं

मुनासिब है राहों में पत्थर होना भी,
इंसाँ ठोकरें खाकर ही संभलते हैं

साथ रहकर भी, साथ नहीं होते,
छूट जाने पर क्यूँ हाथ मलते हैं

क्या ही बात करूँ साँप की,
अब तो लोग भी ज़हर उगलते हैं

(78)

उम्मीदों की दुनिया मत सजाया करो,
जज़्बातों पे ज़रा तरस खाया करो

रखो काज के राज़ ख़ुद तक ही,
घूम-घूमकर सबको न बताया करो

लग जाती हैं टूटे दिलों की आहें,
किसी को इतना न सताया करो

याद रहें फ़साने मौत के बाद भी,
हो सके तो नाम भी कमाया करो

जियो ज़िंदगानी मरकर भी,
कुछ ऐसा करके मौत को हराया करो

जो न करे क़दर जज़्बातों की,
ऐसों को दिल से न लगाया करो

बात-बात पे जो इज़हार किया करते हैं
अक्सर वही दिलों का व्यापार किया करते हैं

—

(79)

कितना भी दे लो इस जहान को,
तोड़ देंगे फिर भी तेरे मकान को

ऊब जाते हैं अपनों की ख़िदमत में,
मिला करती है इज़्ज़त अनजान को

जो भी बोलो, ज़रा धीरे ही बोलो,
पता न लग जाए दीवारों के कान को

पार हो गई हदें हैवानियत की भी,
सजदा करता हूँ मैं अब शैतान को

रख लेते हैं सोने, चांदी, हीरे, मोती,
फेंक देते हैं बाक़ी सामान को

बना रहता है हरफ़ों का ज़ख्म हमेशा,
सोच-समझकर खोला करो ज़बान को

याद रहती है सिर्फ़ ख़ता ही ख़ता,
भूल जाते हैं लोग एहसान को

ज़ालिम होती हैं मुफ़लिसी बहुत,
कुचल देती हैं दिल के अरमान को

हुआ करती हैं इबादत मनसबों की,
कौन पूजता है यहाँ इंसान को

चल रहा है क्या ज़माना,
जगह मिलती है फ़रेबी पहचान को

लेते हो, तो देना भी सीख लो,
चीज़ न समझा करो इंसान को

समझ बैठता है वो सबको अपना,
कैसे समझाऊँ उस नादान को

बसर करें यहाँ के लोग यहीं पर,
नज़र न लगा दे दूसरे जहान को

(80)

रहा करो मसरूफ़ ख़ुद की ख़िदमत में
यक़ीनन, मिलता है लिखा हुआ क़िस्मत में

उठा करता है इक सवाल ज़ेहन में,
क्यूँ रहती है इज़्ज़त औरत की इस्मत में

आती है समझ अहमियत चीज़ों की,
ज़िन्दगी जाती है जब क़िल्लत में

जीते हैं ज़िंदगानी ऊपर से ही,
उतरते नहीं है लोग हिकमत में

खोया, क्या पा लिया तुमने,
बैठकर सोचो कभी फ़ुर्सत में

आबाद तो कोई, बर्बाद हो जाता है,
जलता है, जब शख़्स ज़िल्लत में

नहीं मिलता कुछ भी वक़्त से पहले,
जितनी चाहें ताक़त लगा लो मिन्नत में